THEMATICS®
PUBLICATIONS PVT LTD
www.thematicsjournals.org

ISSN 2320-5075

SAHITYA ANAND

AN INTER-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 1 ● Issue 5 ● Aug 2013

Ramkishan Bhise
Executive Editor

S. S. Kanade
Editor-in-Chief

THEMATICS™
PUBLICATIONS PVT LTD
www.thematicsjournals.org

SAHITYA ANAND
ISSN 2320-5075
Vol 1. Issue 5. Aug 2013.
Available online at http://www.thematicsjournals.org/SA

CONTENTS

BADAL SIRCAR'S *EVAM INDRAJIT*: A CRITIQUE OF THE CONTEMPORARY MIDDLE CLASS
Ashok Bhosikar
1 - 3

SUBVERSIVE NARRATION AND *THE GREAT INDIAN NOVEL*
Bimal Kumar
4 - 9

SOLITUDE AND SALVATION IN TAGORE'S *GITANJALI*
Vishal Chandrakant Bodhale
10 - 12

MILAN KUNDERA'S *THE JOKE* AS A PARABLE OF LAUGHABLE REVENGE
Anila Chandran
13 - 15

WILLIAM GIBSON'S *VIRTUAL LIGHT* AS POSTMODERN CYBERPUNK SCIENCE FICTION
R. B. Chougule
16 - 18

ETHOS OF SOCIAL REALITY IN J.M. COETZEE'S *DISGRACE*
Catherin Edward & S. Akilandeshwari
19 - 24

REFLECTION OF MIDDLE CLASS MENTALITY IN VIJAY TANDULKAR'S *SILENCE! THE COURT IS IN SESSION*
Anuradha Subhash Jagadale
25 - 26

ASPECTS OF TEACHING ENGLISH IN ENGINEERING COLLEGES OF ANDHRA PRADESH
Afsha Jamal & K. Sandhya
27 - 32

COSMIC HORROR IMAGERY IN RAMSEY CAMPBELL'S *THE HUNGRY MOON*
Advait D. Joshi
33 - 38

WOMEN IN ANITA RAU BADAMI'S FICTION
S. Karthik Kumar
39 - 42

PORTRAYAL OF DEGRADED HUNGER AND POVERTY IN
UCHALYA THE BRANDED
Gopal B. Shelkikar
43 - 45

STYLISTIC TECHNIQUES IN THOMAS HARDY'S SELECTED POEMS
Sachin B. Mane
46 - 48

SUBALTERN ISSUES IN MAHESH DATTANI'S ART
Deepak S. More
49 - 51

HOME AND HOUSE; A STUDY IN DIASPORIC PERSPECTIVE IN LAHIRI'S *THE NAMESAKE*
Partha Sarathi Mandal
52 - 56

R. K. NARAYAN'S USE OF MYTH: A CRITICAL STUDY
Dilip Kumar Prasad
57 - 61

रेडियो एक महत्त्वपूर्ण माध्यम
एस. के. खोत
62 - 63

प्राचीन एवं मध्यकालीन देशी शब्दों का ऐतिहासिक परिदृष्य और साहित्यिक हिन्दी के विकास में उनका महत्व
अमित शुक्ल
64 - 69

दया प्रकाश सिन्हा के नाटक 'साँझ सबेरा' में बिंबित सदाचार
ज़फरुल्लाखान के. के.
70 - 71

हिन्दी नाटकों में दु:खान्त की अवधारणा
सुनीता डोगरा
72 - 77

डॉ. रामकुमार वर्मा के ऐतिहासिक एकांकीयों में त्याग और बलिदान की वीर नारियाँ
अंबुजा मळखेडकर
78 - 79

२१ वीं सदी में राजभाषा हिन्दी
ओम विकास
80 - 86

मानवीय जीवनमूल्य की संकल्पना
दिलीप कोंडिबा कसबे
87 - 89

भारतातील अन्नसमस्या: कारणे आणि उपाय
वर्षा के. नेहेते
90 - 92

THEMATICS
PUBLICATIONS PVT LTD
www.thematicsjournals.org

SAHITYA ANAND (साहित्य आनंद)
ISSN 2320-5075
Vol 1. Issue 5. Aug 2013. pp. 62-63.
Paper ID: 80022013161
Available online at http://www.thematicsjournals.org/SA
Paper received: 25 June 2013. Paper accepted: 06 July 2013.

रेडियो एक महत्त्वपूर्ण माध्यम

एस. के. खोत

भारतवर्ष में सूचना मंत्रालय की महत्त्वपूर्ण इकाई रेडियो है। इंडियन ब्राडकास्टिंग कम्पनी के द्वारा मुंबई और कलकत्ता में १९२७ में केन्द्रों की स्थापना हुई, मूलत: यह में निजी कम्पनी थी। सन १९३० में इस कम्पनी के परिसमापन के उपरांत भारत शासन ने प्रसारण कार्य को अपने नियंत्रण में कर लिया और इसका नाम इंडियन स्टेट ब्राडकास्टिंग रखा। आगे जाकर कंट्रोल ऑफ ब्राडकास्टिंग का नया कार्यालय मुंबई कलकत्ता के साथ-साथ दिल्ली में भी खोला गया। इंडियन स्टेट ब्राडकास्टिंग का नाम १८ जून, १९३६ को बदलकर ऑल इंडिया रेडियो रखा गया। हमें भुलना नही चाहिए कि प्रथम रेडियो स्टेशन १९२० के दशक हमें न्यूयॉर्क तथा शिकागो में शुरु हुआ, जिसका उद्देश चुनाव समाचारों, क्रीडा जगत् के समाचारों तथा नाट्यविधा के कार्यक्रमों की जानकारी देना था। प्रसार भारती एक महत्त्वपूर्ण तथा जिम्मेदार स्वायंतशाही निकाय है, जिसका गठन प्राप्त भारती अधिनियम १९९० के अंतर्गत किया गया है।

खेद की बात यह थी पहले-पहले राजनेताओं की रेडियो तक पहुँच नहीं थी, वे रेडियो के द्वारा अपना वक्तव्य जारी नहीं कर सकते थे। स्वतंत्रता आंदोलन से जुडे राजनेताओंने अपना सपना पुरा करने के लिए रेडियों ट्रांसमीटर प्रयुक्त करके संदेश प्रसारित किया, इस क्षेत्र में युवा सेनानियों का योगदान सराहनीय है। "युवा कांग्रेसी स्वतंत्रता सेनानियों के एक समूह ने (जिसमें उषा मेहता, विठ्ठलदास खाकड, चौडाकांत कावेरी सम्मिलित थे) ४१.७८ मीटर बैंडपर ९ सितंबर, १९४२ को एक आपातकालीन कांग्रेस से रेडियो आरंभ किया।"[१] इस रेडियो स्टेशन से कई दिनों तक प्रसारण जारी रहा। अंग्रेज पकडे जायेंगे इस भय से मोबाईल स्टेशन स्थान में हर बार बदलाव करते रहें। यह कांग्रेस का गोपनीय रेडियो स्टेशन था। दुर्भाग्य से कई लोग पकडे गये, उनपर मुकदमा चलाया गया। ऑल इंडिया रेडियो की एक अलग शाखा चलाने का प्रयास समाप्त हो गया। "स्वतंत्रता से पहले ऑल इंडिया रेडियो को सही मायने में राष्ट्रीय नेटवर्क बनाने की जरुरत हुई। देश में दिल्ली, बम्बई (मुंबई), कलकत्ता (कोलकत्ता), मद्रास (चेन्नई), लखनऊ और तिरुभिपति में छ: हैं, एवं मैसूर, त्रावणशेर, हैदराबाद और औरंगजेब इस देशी रियासतों में चार कुलदान स्टेशन थे।"[२]

१९५७ में 'विविध भारती' नाम से वाणिज्यिक चैनल की निर्मिती हुई, जिससे रेडियो के प्रति रुचि बढ गई। १९६९ में दिल्ली स्टेशन से 'युवावाणी' नामक नया कार्यक्रम शुरु हुआ। १९७६ में दूरदर्शन को ऑल इंडिया रेडियो से पृथक कर दिया।

खबरों की दुनिया में उपग्रहों के माध्यम से सुना जा सकता है, तो दूरदर्शन के जरिए देखा तथा सुना जा सकता है। "आधुनिक विस्मयकारी संचार उपकरणों ने समाचार संकलन, संपादन, मुद्रण, प्रतिशोधन, प्रकाश तथा प्रसारण के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति उत्पन्न कर दी है। समाचार पत्रों के क्षेत्र में जो क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है, उनमें रेडियो (आकाशवाणी) तथा टेलीविजन (दूरदर्शन) की भूमिका भी अनदेखी नहीं कीं जा सकती। रेडियो तथा दूरदर्शन पत्रकारिता इसी की देन है।"[३] तकनीकी दृष्टि से रेडियो ध्वनियों का प्रसारण करता है। रेडियो की शब्दावलीवाक् संगीत सहित ध्वनि प्रभाव तथा मौन प्रकार की सामग्री से तैयार होती है। "यह सभी जानते है कि रेडियो में वाचन भी लेखन भी महत्त्वपूर्ण होता है। भाषा में अटकाव, वाचन को अवरुध्द करना है। अत: ऐसे शब्दों से बचना आवश्यक होता है, जो उनके वाचन को अवरुध्द करें। फिर भी रेडियो-संप्रेषण में श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए वक्ता की अपनी वाणी में उतार-चढाव और ताल (Tempo) तथा स्वर (Tone) में विविधता लानी पडती है।"[४]

समय सीमा रेडियो हेतु लेखन में महत्त्वपूर्ण बात होती है। विषय के अनुरुप भाषा में प्रभाव क्षमता लाने का भरसक प्रयास होता है। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना आवश्यक है। समाज में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, वही रेडियो की भाषा होना जरुरी होता है। सच

एस. के. खोत: अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, चंद्राबाई-शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी, हातकणंगले, कोल्हापूर (महाराष्ट्र)।

यह है कि लोगों की आवश्यकता के अनुसार ही विषय तथा भाषा रेडियो की होनी चाहिए। ऑल इंडिया रेडियो का समाचार विभाग चार पालियों में चोबीस घंटे कार्यरत रहता है। समाचार देश-विदेश कोने-कोने से आतें है। रेडियो समाचार चुनाव के लिए ऐसे कोई विशेष नियम नहीं है। 'न्यूजपूल प्रणाली' के द्वारा समाचारों में गति एवं एकरुपता बनाए रखने में सफलता मिलती है। किस प्रांत में कौन-सा समाचार महत्त्वपूर्ण है - यह ध्यान में रखकर ही समाचार प्रसारित किए जाते है। कोई भी श्रोता समाचार को सुनने से वंचित न रह जाए इसके लिए बार-बार समाचार का प्रसारण किया जाता है। रेडियो समाचारों की प्रस्तुति वर्तमानकाल में ही की जाती है। सरल, सुगम और प्रवाहमयी होना महत्त्वपूर्ण होता है, जिसके कारण भाषा श्रोताओं को सहजता से समझे। रेडियो की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह बडी संख्या में लोगों को एक साथ संबोधित करता है। सूचना तथा मनोरंजन करने में महत्त्वपूर्ण दायित्व मीडिया का रहता है।

रेडियो में आवाज एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। "प्रत्येक व्यक्ति की आवाज के पैमाने भिन्न-भिन्न होते है। अत: माइक्रोफोन पर आवाज को स्पीकर्स के माध्यम से सुनकर आवाज की गुणवत्ता को तकनीकी तौर पर संयोजित एवं नियंत्रित किया जाता है। कार्यक्रम के अनुरुप माईक भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं। छोटे से लेकर बडे माइक में ध्वनि के अनुरुप तकनीकी उपबंध होते है।"[५]

रेडियो ध्वनि तरंगो का श्रव्यमाध्यम है, जिसे खाना खाते, सोकर तथा अन्य काम करते समय सुन सकते है। रेडियो की एक निश्चित ऐसी सीमा है। माइक्रोफोन बोलनेवाले एवं श्रोता के बीच महत्त्वपूर्ण तथा संवेदनशील कडी है। रेडियो की भाषा मौखिक होती है।

कस्बा हो या गाँव या नगर रेडियो की गूँज सुनाई पडती है। अमीर तथा गरीबों के घर में भी रेडियो होता है। देश-विदेश समाचारों साथ-साथ विभिन्न विषयों पर वार्ताएं, कला, विज्ञान, साहित्य, साक्षात्कार, नाटक, पर्यावरण एवं धर्म, खेल, संस्कृती आदि के बारे में कार्यक्रम सुनाई देते है। रुपचंद गौतम के शब्दों में "रेडियो जनसंचार ध्वनि पर आधारित माध्यम है, जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक जन-जन के कानों तक पहुँचती है। यह केवल सुने जाते है, देखे व पढे नहीं जा सकते। इसलिए इन समाचारों को इस प्रकार लिखा और प्रस्तुत किया जाता है कि समाचार में पूर्णता का भाव भी हो और वह श्रोताओं को आसानी से समझ में जाए।"[६]

संदर्भ:

[१] जनसंचार माध्यम एवं पत्रकारिता, प्रेमनाथ राय, पृ. १४२।

[२] वही, पृ. १४३।

[३] हिंदी पत्रकारिता का स्वरुप, डॉ. गोविंदप्रसाद, अनुपम पांडे, पृ. २५५।

[४] वही, पृ. २५५।

[५] वही, पृ. २५५, २५६।

[६] संचार से जनसंचार, रुपचंद गौतम, पृ. १३९।